B3

8.1

श्री गणेशायनमः

भृगु प्रश्नावली

लेखक—

ज्योतिर्विद पं० गोपालजी चतुर्वेदी

गंगाभुवन (मथुरा)

प्रकाशक—

पुस्तक मन्दिर, मथुरा।

प्रथम बार २०००] सन् १९५२ [मूल्य १॥)

प्रकाशक—
शिवचरनलाल गुप्ता
पुस्तक मन्दिर, मथुरा।

मुद्रक—
पं० जयसिंह शर्मा
जयप्रेस बंगालीघाट, मथुरा।

भृगु-प्रश्नावली

मङ्गला चरण

सोहे जटाजूट ऊपर विशाल भाल के,
ता ऊपर सुरसरि की छटा छियारी है।
'शंकर' सुरुचि सोम सविता हुतासन चिर,
खञ्जनमद गञ्जन नैन विकट विगरी है।
उर में उरग बीच सोहे रुद्राक्षी माल,
रुद्र सुन कुण्डल युग कलित निकारी है।
गजमुख, षडमुख, जोवे चतुर्मुख आनि,
पन्चमुख प्यारो तू न्यारो त्रिपुरारी है।

❋ प्रश्न विधि ❋

प्रश्न करने वाले को सबसे पहले अपने सोचे हुए प्रश्न को उपकोष्ठ १ व २ व ३ में देखना चाहिये एवं उसके सामने लिखे अक्षर (स्वर-व्यन्जन) के अनुसार वर्ग जानकर कोष्ठ १-२-३-४-५-६-७-८ ९-१० में से किसी एक कोष्ठ में से अपने इष्ट का ध्यान रख दो अङ्क छाँटें। छाँटने से जो दो अङ्क आवें उनको जोड़ दें फिर जोड़ में ९ का भाग लगावें। भाग लगाने से जो शेष बचे अलग रखदें। और लब्धि को अलग रखकर अपने प्रश्न के सामने लिखे हुए अङ्क में जोड़ दें। जोड़ में ७ का भाग लगावे जो शेष बचे उसके अनुसार अपने प्रश्न के नम्बर पर लिखे हुए फल को जान लेवे।

उदाहरण के लिये मान लिया हमारा प्रश्न "रोग मिटेगा" है उसके सामने ''क'' अक्षर लिखा हुआ है। अतः उसका वर्ग "क वर्ग" क्योंकि "क ख ग घ ङ" में से कोई भी एक अक्षर आवे तो उसे "क वर्ग" में ही मानोगे। अब "क वर्ग" कोष्ठ-१ में से दो अँक ३१ और ३२ छाँटे। अब इन दोनों को जोड़ा तो ६३ आये। अब ६३ में ९ का भाग दिया लब्धि ७ आई। अब हमारे प्रश्न "रोग मिटेगा" के आगे

(सामने) १२ अँक लिखे हैं अतः १२ में ७ जोड़ें (१२+७)=१६ हुए। अब १६ में ७ का भाग दिया १६÷७=५ शेष बचे। अतः प्रश्न का नम्बर (२) है। सो सूची में प्रश्न दो का फल देखा तो पेज ४१पर दिया हुआ है। इसलिये ४१ पेज पर ५ वे खण्ड का प्रश्न-फल पढ़कर मालूम कर लिया कि रोग मिटने में द्विविधा है यानी अच्छा भी हो या नहीं और शुक्र का पूजन करने से रोग मिट जावेगा। इसी प्रकार हम हरएक प्रश्न को मालूम करेंगे।

*** वर्ग ***

वर्ग १० होते हैं। जिनमें निम्नलिखित ५-५ अक्षर होते हैं।

१ अवर्ग में—अ इ उ ए ओ	में से कोई भी एक			
२ कवर्ग में—क ख ग घ	„	„	„	
३ चवर्ग में—च छ ज झ	„	„	„	
४ टवर्ग में—ट ठ ड ढ	„	„	„	
५ तवर्ग में—त थ द ध	„	„	„	
६ पवर्ग में—प फ ब भ	„	„	„	
७ सवर्ग में—स श ष ह	„	„	„	
८ उष्मा में—य र ल व	„	„	„	
९ अन्तस्थ में— ङ ण न	„	„	„	
१० अन्तिम वर्ग में—क्ष त्र ज्ञ	„	„	„	

नोट—प्रत्येक प्रश्न के ७ खण्ड होते हैं जो शेष के अनुसार फल बतलाते हैं। जैसे—

१	शेष	बचे तो	१	खण्ड में	देखें
२	„	„	२	„	„
३	„	„	३	„	„
४	„	„	४	„	„
५	„	„	५	„	„
६	„	„	६	„	„
७	„	„	७	„	„

प्रश्न सूची

इस प्रश्न—सूची में बाँई ओर प्रश्न की संख्या और दाहिनी ओर पेज की संख्या दीगई है। इसमें प्रश्न के नम्बर देखकर पेज की संख्या मालूम करलेनी चाहिये उसी नम्बर पर प्रश्न फल मिलेगा

प्रश्न	पेज	प्रश्न	पेज
१	२१	२२	११८
२	४१	२३	१३६
३	५९	२४	१३२
४	६९	२५	११०
५	२५	२६	४४
६	१२०	२७	११७
७	१२५	२८	१३६
८	९४	२९	६५
९	३६	३०	८१
१०	१७	३१	९९
११	१३८	३२	६५
१२	३५	३३	९६
१३	८९	३४	१३१
१४	१०८	३५	८
१५	१०४	३६	७८
१६	१२२	३७	९६
१७	१३	३८	१११
१८	३३	३९	१३९
१९	५३	४०	५७
२०	८५	४१	४२
२१	३१	४२	२३

प्रश्न	पेज	प्रश्न	पेज
४३	६०	७१	६१
४४	६४	७२	१२०
४५	१०१	७३	६२
४६	११०	७४	६
४७	१२७	७५	५५
४८	१३१	७६	१६
४६	७६	७७	५७
५०	४६	७८	७४
५१	४८	७६	६१
५२	१३६	८०	१०६
५३	२७	८१	१२४
५४	११३	८२	१३६
५५	११३	८३	१३६
५६	१२६	८४	७६
५७	१३४	८५	१३६
५८	१०	८६	१३६
५६	३८	८७	१३६
६०	५०	८८	१३६
६१	६७	८६	१३६
६२	८३	६०	५२
६३	६७	६१	१३६
६४	६४	६२	१३६
६५	१३१	६३	१३६
६६	१५	६४	१३६
६७	११३	६५	१३६
६८	७१	६६	१३६
६६	८७	६७	१३६
७०	१०३	६८	१३६

❁ दो-शब्द ❁

सृष्टि–रचना–चतुर, संसार चक्र परिचालक अजन्म एवं अनीह चतुर्मुख ब्रह्मा की चतुरता का पारावार नहीं है। वह समयानुसार संसार की गति को परिवर्तित करता रहता है। उसने अपनी सृष्टि में समय बलवान बनाया है। समय की गति-विधि कोई भी नहीं जान सकता, न जाने कब क्या हो जाय। समय परिवर्तनशील है। अतः आधुनिक समय में उस ज्योतिष विद्या पर बहुत कम मनुष्य विश्वास रखते हैं, जिसको प्राचीनकाल में सभी मनुष्य मानते थे और जिसके बिना किसी का काम नहीं चलता था। इस पतन का कारण केवल धोखेबाज पंडित ही हैं। अतः उनके जाल से बचने के लिये ज्योतिर्विद पं० गोपाल जी चौबे ने इस ग्रन्थ को रचकर जनता के सामने प्रस्तुत किया है। इसमें ग्रन्थकार ने अपने सम्पूर्ण जीवन का अनुभव एवं अपने इष्टदेव तथा गुरु का ज्ञान भरा है।

आधुनिक काल में जबकि भारत वर्ष में निर्धनता अपना नृत्य निःशँक रूप से करही है। प्रत्येक मनुष्य "चिन्ता सांपिन को नहि खाया" के

अनुसार चिन्ता का ग्रास बना हुआ है। वह अपने हृदय के अन्तर्गत अनेक प्रश्न एवं चिन्ताओं के लिये घूमता है। उसके प्रश्न एवं चिन्ताओं का निवारण कोई भी नहीं कर सकता वह बेचारा मारामारा घूमता है। इसी भावना से प्रेरित होकर ग्रन्थकार के हृदय में उनके कष्ट को नष्ट करने की उमंग तरंग उठी और यह ग्रन्थ रच डाला। अनेक दिवसों के परिश्रम के उपरान्त यह ग्रन्थ तैयार हुआ।

सर्व प्रथम इस ग्रन्थ का मूल भाग जो कि गणित करके निकाला था मैंने पद्य में रचा, वही पद्यभाग ग्रन्थ के आदि में दिया गया है। उस पद्य भाग को सरल एवं पाठकोपयोगी बनाने के हेतु इस का विस्तृत रूप करके प्रस्तुत ग्रन्थ के रूप में आपके सामने रखा है। इसके द्वारा निकले हुए प्रश्नों के उत्तर शत प्रतिशत ठीक निकलते हैं।

आशा है आप सभी इस ग्रन्थ से लाभ उठावेंगे।

भवदीय—
शंकरलाल चतुर्वेदी B.A.

अथ भृगु प्रश्नावली

कुन्द चन्द सम वरन अरुन कछु आभा दीसै।
जिमि पावस के मेघ बीच नभ रवि छवि छीजै॥
किधौ उदधि दधि लस्यो सुखद कच्छप भय कारी।
चलत तरङ्गि ते तरङ्ग उरग उर में वाले हारी॥
पोखे विकट छवि उदधि पति रहयहु सशंकित चन्द्रमन।
सो भय कारन जाय वह सीस छिपो है मुदित मन॥१॥
कर त्रिशूल जन—शूल विविधि विधि नितहि नसावे।
मन्दहास दै दरस हरस नित जनहि लहावे॥
धुनि डमरू तहं छाय सुता अज नितहि लजावें।
करत प्रेम गिरि सुता धरम की रीव जतावें॥
नित नित नूतन करत नृप देहि सबहि सुख सहज सुनि।
कोकपाल शंकर सरिस बसहु निरत मग मुदित मन॥२॥
जन रुति मृत तट कहत रहत तुम तिहुँ पुर स्वामी॥
अशिव भेष जन भनत नाम शिव कहत अकामी॥
रज पट, भूषण व्याल जाल जग वैभव यांचे।
वाहन वृष अति दृढ़ तदपि वारण सुर जांचे॥
मिलत सुधाधर विष प्रबल एक अमिय एक मृत करन।
जय दीन बन्धु शंकर कहत तुम्हें प्रसंसहु मुदितमन॥३॥
गननायक वर बदन कों, पूजहि वारम्बार॥

रच्यों भृगु प्रश्नावली, सुख धन जन दातार ॥
प्रश्न करहु तुम मुदित मन, नहि राखो कछु संक ।
ख विधि आदि सम विसम कों, धरहु ठौर इक अङ्क ॥
पुनि अचहल वर्षादि कों देखि तकहु उपकोष्ठ ॥
शंकर शिव को साचिकर, अंक लेहु युग कोष्ठ ॥
ताकों पुनि इक योगकर ग्रह सों भाग लगाय ।
शेष त्याग लै लब्धि कों, जोड़े प्रथमहि जाय ।
योग लिखे पुनिवार सों, भाग लगा लै शेष ।
पावहुगे फल प्रश्न को, यामें मीन न मेष ॥
एक बुरो मध्यम दूओ, तीजो सब गुण खान ।
उत्तम विधि पञ्चम सहज, छठो सात दुखदान ।
या क्रम सों फल प्राप्त कर, विधि कों निरत मनाय ।
शङ्कर अज सब का सकत, तासों को न वसाय ।

॥ इति पद्य भाग समाप्तम् ॥

अथ भाषा—

भृगु प्रश्नावली प्रारम्भः

मंगलाचरण

ब्रह्मामिधाच्चिद्घन बोध रूपा सत्याऽद्वितीया खलु-वासुदेवी। नित्याऽमिता सर्वगता व्यतीता काचित्कला साजयतु प्रकृष्टा॥ गंगाधरम् शिवम् पूज्यम् पूजयित्वा अविनाशिनम्। नत्वा भृगुमुनिम् देवं लिख्यते भृगू प्रश्नावली॥

जब कि श्री भृगु भगवान् राजा बलि के यज्ञ से लौट कर शीतल मन्द सुगन्ध से ओत प्रोत अपने आश्रम पर आये तब उनके अनेक शिष्य उनकी सेवा सुश्रुषा में लग गये। कुछ क्षणोंपरान्त जबकि श्री शुक्राचार्य प्रसन्न चित्त हुए तब उनके रुख एवं मुदित स्वभाव को देखकर शिष्यों में अपने अपने दुख रोये। उन्होंने अनेक प्रकार के तर्क वितर्क किये एवं प्रसन्नता से जीवन यापन करने का मार्ग पूछा। बहुत सोंच विचार के बाद

श्री भृगुदेवजी अपने शिष्यों से अपने आश्रम पर बैठे हुए प्रसन्न होकर प्रश्नावली का उत्तर बतलाते हुए कहने लगे कि आप कोई भी प्रश्न पूछो हम आपके प्रश्नों का उत्तर देंगे। उनके शिष्यों ने पृथक २ अनेक प्रश्न पूछे उन्होंने गणितानुसार उत्तर दिये। उनके संग्रह को मैं आपके सामने रखता हूं।

१ अ० ७४

आपके प्रश्न में वर्तमान परिस्थित है प्रश्न उत्तम है। प्रश्न कर्त्ता के क्रूरग्रह होने से कार्य नहीं होगा। प्रश्न कर्त्ता सोमवार का व्रत करके श्री महादेव जी का पूजन करे। कार्य सफल हो सकेगा। आगे भावी बलवान है॥

२

आपका प्रश्न भी आधुनिक परिस्थित से ओतःप्रोत है। प्रश्न उत्तम है। प्रश्न कर्त्ता के शुभग्रह होने के नाते कार्य सफल होगा। प्रश्नकर्त्ता भाग्य निर्णायक सोम वार को व्रत करके श्री रुद्रदेव का पूजन करें। सफलता अवश्यम्भावी है। रामकृपा सर्वोपरि है॥

३

श्री असुरराजगुर प्रश्नकर्त्ता से भृकुटि भङ्गिमा करते हुए कहते हैं कि तुम्हारा प्रश्न साधारण है। कार्य

गोचरानुसार सफल नहीं हो सकेगा। कारण कि आप पर बुध देव का प्रकोप है। अतः उस दिन व्रत करके श्री आशुतोष जी का पूजन करें। भावी को भी बदलने वाले शिव की कृपा से कार्य सफल हो सकेगा॥

४

प्रश्नकर्ता का प्रश्न आधुनिक वातावरण में उत्तम है परन्तु गुरुदेव आप पर नाराज हैं। अतः उनको प्रसन्न रखिये। कार्य में सफलता मिलेगी। प्रश्नकर्त्ता बृहस्पति का व्रत करके श्री शंकरजी का पूजन करें। राम कृपा बलवती है।

५

श्री शुक्र गुरु वैरी प्रसन्न होते हुए कहते हैं कि आपका प्रश्न उत्तम है सफलता अवश्यंभावी है। अतः कार्य होगा। आप गुरुदेव शुक्र को प्रसन्न करें। साथ ही पार्वती पति महादेव का पूजन भी करें॥ आगे ईश्वरीय कृपा बलवती है।

६

आपका प्रश्न उतावल से परिपूर्ण है कार्य में सफलता शीघ्र चाहते हो सो शीघ्र ही होगी परन्तु मन्दगामी रविसुत के प्रकोप से विलम्ब भी हो सकता है।

अतः आप उन्हें मनावें और शम्भु का पूजन पय-पान द्वारा करें। मनोकामना पूर्ण होगी॥ आगे ईश्वरीय कृपा बलवती है।

७

प्रश्न कर्त्ता का प्रश्न साधारण है। कार्य सफल होने में द्विविधा है। सूर्यदेव का कोप है। अतः उन्हें शान्त करने के लिये रविवार का व्रत करें एवं भवानी का पूजन करें। भवानी की कृपा से कार्य सफल हो सकेगा। आगे भावी बलवान है॥

१ प्र० ६०

श्री भृगुदेव जी गम्भीर स्वर में कहते हैं कि हे पुत्र तुम्हारा प्रश्न पुत्रभिलाषा को लिये हुए है। आपके प्रश्न में गर्भ विषयक भावना भासित होती है। आप पर निशापति का प्रकोप है अतः गर्भ नहीं है। आप सोमवार का व्रत करें तो इस काम में एवं अन्य काम में भी सफलता प्राप्त होगी। आपुतोश महादेव प्रसन्न हों। ऐसा प्रयत्न कीजिये।

२

श्री आचार्य महोदय प्रसन्नता पूर्वक कहते हैं कि हे शिष्य तुम्हारा प्रश्न पुत्राभिलाषा को लिये हुए है।

आपके प्रश्न में गर्भ विषयक भावना भासित होती है। आपका प्रश्न उत्तम है। शुभ-ग्रह की शुभ दृष्टि होने से गर्भ रहेगा। ऐसा विचार में आता है। पुत्र प्रदायक पिनाकी भगवान का मंगलवार को व्रत करें॥ मनोकामना पूर्ण होगी।

३

महोदय आपका प्रश्न चिन्ता जन्य है। आपकी सुखाकृति संतति प्राप्त करने की प्रबल इच्छा प्रदीप्त कर रही है। सो क्रूर ग्रहों के रुष्ट होने से आपके संतति का योग नहीं है। बुधदेव को प्रसन्न करने के हेतु व्रत करें। महादेव पूजन पुत्राप्ति करावेगा।

४

श्री गुरुवर कहते हैं कि हे पुत्रवर आपका प्रश्न चिन्ता जनक है। आपको सन्तान प्राप्त करने की उत्कट अभिलाषा है। आप पूछते हैं गर्भ है सो गर्भ तो है तथापि श्रीगुरुका पूजन करें मनोकामना पूर्ण होगी। आगे रामकृपा बलवती है॥

५

श्री सित-गुरु महोदय कहते हैं कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न में गोचरानुसार गर्भ विषयक

भावना है। अतः गर्भ है ऐसा विचार में आता है। आप देवी का पूजन करें और दुर्गा पाठ करने से सन्तति सुखकर होगी। शेष रामकृपा बलवती है॥

६

श्री भृगुदेव जी का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न अति-उत्तम है। उसको गर्भ-सम्बन्धी अभिलाषा है सो शुभ ग्रहों की अनुकम्पासे गर्भ है। श्री शनिदेव को प्रसन्न करने के हेतु श्री हनुमानजी का पूजन मन्दवार को करें। मनोकामना अवश्यमेव पूर्ण होगी। आगे रामकृपा बलवती है।

७

श्री आचार्य महोदय अपने शिष्यों से कहते हैं कि इस प्रश्न के करने वाले का प्रश्न समाज हित की भावना से प्रेरित है। साथ ही में स्वार्थ भी निहिति है। गोचरों को देखने पर आपका प्रश्न वर्षा सम्बन्धी है सो अभी वर्षा में विलम्ब है। कालकूटपान करने वाले रंगेश्वर महादेव का सोमवार को पूजन करें तो वर्षा हो सकेगी। आगे ब्रह्मा की लिपि अमिट है।

२ प्र० ५८

प्रश्न कर्त्ता का प्रश्न समाज सापेक्ष वस्तु से सम-

न्वित है। वर्षा विषयक भावना आप में अति बलवती है। गोचरानुसार वर्षा होने के लक्षण तो प्रतीत पड़ रहे हैं। आप सोमवार को पवन-पुत्र का पुनीत पूजन करें तो वर्षा शीघ्र और अच्छी हो सकेगी। आगे राम कृपा बलवती है।

२

श्री भृगुदेव जी कहते हैं कि आपका प्रश्न वर्षा में विलम्ब होने के कारण वर्षा सम्बंधी है परन्तु दुख तो इस बात का है कि गोचरानुसार फल देखते हुए वर्षा में अद्यापि विलम्ब है आप बुधदेव की शान्ति करें तो वर्षा हो सकेगी। आगे रामकृपा बलवती है।

३

इस प्रश्न करने वाले के हृदय में अवश्यमेव समाजहित भावना है आप स्वार्थ की भावना से भी प्रेरित होकर पूछते हैं कि वर्षा होगी या नहीं। शुभग्रहों के प्रभाव एवं गति को देखते हुए महावृष्टि का योग है। तथापि गौ पूजन से वर्षा अविलम्ब होगी। आगे भावी बलवान है॥

४

श्री भृगुभगवान शुक्र से कहते हैं कि पुत्र इस

प्रश्न का गुरू देव स्वामी है। और वह कहता है कि प्रश्नकर्ता ने जो प्रश्न पूछा है वर्षा होगी सो निसंदेह आपके प्रश्न का फल उत्तम होने से निश्चय करके होगी।

ऐसा गोचरभाव है अब आप यथा सम्भव शुक्र का पूजन करें आगे भगवान करें सो होगा।

५

श्री शुक्राचार्य महोदय कहते हैं कि प्रश्न कर्ता शनि के ताप से पीड़ित है वह ताप शान्त्यर्थ वर्षा का योग चाहता है। उसके लिये कहना इतना ही पर्याप्त है कि गोचरानुसार फल देखते हुए वर्षा का योग है। शनिवार को हनुमान जी पर चोला चढ़ाने से वर्षा अवश्य होगी॥ ऐसा हमारे विचार में आता है। आगे राम कृपा को मेटनहारा॥

६

प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न है तो उत्तम वह सूर्य के पुखर ताप से संतप्त है। सूर्य बलवान होने से उसका ताप अभी घटने का नहीं है। प्रश्नकर्त्ता वर्षा का योग चाहता है सो वैसे तो वर्षा नहीं होगी परन्तु सूर्य की शान्ति करने पर वर्षा होने की सम्भावना है। अतः सूर्य की

पूजा करें। वर्षा होगी। आगे विधि विपरीत न चलत गुसांई॥

७

प्रश्नकर्ता का प्रश्न है तो स्वार्थ से पूर्ण। उसका किसी अन्य से संघर्ष चल रहा है। उसको अपने मन में जीतने की जिज्ञासा लगी हुई है। चन्द्रमा के घातक होने पर उसे जीत नहीं होगी। सोमवार का व्रत करे एवं विजयदाता पुरारी का पूजन करें तो जीत हो सकेगी आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० १७

श्री शुक्राचार्य महोदय कहते हैं कि हे शिष्यवर तुम्हारा प्रश्न उत्तम है तुम समर में अथवा वाक् संघर्ष में जीत चाहते हो। गोचरानुसार भाग्योदय होने की संभावना है अतः तुम्हारी जीत होगी। तथापि भूमिज की पूजा करें॥ आगे हरी भगवान् सर्व सामर्थ्यवान् हैं।

२

श्री शुक्राचार्य का कथन है कि शिष्यवर तुम्हारा प्रश्न उत्तम नहीं है। अन्याय का क्षेत्र तुम में हरेक तरफ से व्याप्त है तथापि तुम शत्रु पर विजय चाहते

हो सो बुध विपरीत होने से विजय न होगी। बुधवार का व्रत करें। विजय हो भी सकती है॥

३

श्री सित-वर महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न उत्तम है। वह न्याय संगत विजय चाहता है। धर्म के बलवान होने से प्रश्न उत्तम है और उसको विजय भी होगी। तथापि गुरुदेव की शान्ति वांछनीय है। आगे राम कृपा बलवती है।

४

प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न उत्तम है। वह कौटुम्बिक संघर्ष में जीत का इच्छुक है सो शुभग्रहों की शुभ दृष्टि होने से एवं उपयुक्त गोचर के कारण विजय होने की अवश्य मेव संभावना है। शुक्र महाराज का पूजन करने से विजय अवश्यमेव होगी। आगे रामकृपा बलवती है॥

५

प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न उत्तम है। वह एक पारिवारिक एवं सामाजिक संघर्ष में विजय का अभिलाषी है। सो शनि देव के अनुकूल होने से भाग्योदय होने की सम्भावना है। शनिवार को श्री हनुमान जी का पूजन करें तो जीत अवश्यम्भावी है। आगे राम कृपा बलवती है॥

६

श्री आचार्य महोदय का कथन है कि पुत्र इस प्रश्न के करने वाले का प्रश्न उत्तम है। वह पारस्परिक झगड़ों में लिप्त है और उसमें विजय चाहता है सो उसको विजय नहीं मिलेगी यदि वह देवी की इतवार को पूजा करें तो जीत अवश्यम्भावी है। आगे रामकृपा बलवती है।

७

श्री आचार्य महोदय का कथन है कि पुत्र इस प्रश्न के करने वाले का प्रश्न उत्तम है। वह मानसिक चिन्ता से लिप्त है। उसमें उसका मन सदैव व्यग्र रहता है। यात्रा होने की सोचता है सो यात्रा नहीं होगी॥ सोमवार का व्रत करके शिव पूजन करे मनो कामना पूर्ण होगी।

१ प्र० ६६

श्री आचार्य महोदय का कथन है कि इस प्रश्न के करने वाले का प्रश्न उत्तम है। वह यात्रा करना चाहता है। अतः गोचरानुसार यात्रा भी हो सकेगी ऐसा योग है। भूमिज को प्रसन्न करें मनोकामना पूर्ण होगी। आगे रामकृपा बलवती है।

२

श्री आचार्य महोदय का कथन है कि इस प्रश्न के करने वाले का प्रश्न उत्तम है। वह यात्रा करना चाहता है अतः गोचरानुसार उसके यात्रा का योग है। भूपरिवर्तन करने को बुधवार का व्रत करें। मनो-कामना पूर्ण होगी। आगे रामकृपा बलवती है।

३

श्री आचार्य महोदय का कथन है इस प्रश्न के करने वाले का प्रश्न उत्तम है। वह स्वदेश से उकता-कर यात्रा करना चाहता है। उसके शुभग्रहानुसार यात्रा का योग है। गुरु देव के मनाने से मनोकामना पूर्ण होगी। आगे रामकृपा बलवती है।

४

श्री आचार्य महोदय का कथन है कि इस प्रश्न के करने वाले का प्रश्न उत्तम है। वह यात्रा करना चाहता है। गोचरानुसार उसके यात्रा का योग है सो अवश्यमेव यात्रा होगी। शुक्रदेव को प्रसन्न करिये। यात्रा अवश्यमेव होगी आगे राम कृपा बलवती है।

५

श्री आचार्य महोदय का कथन है कि इस प्रश्न

के करने वाले का प्रश्न उत्तम है परन्तु क्रूर ग्रहों के बलवान होने से उसकी मनोकामना पूर्ण नहीं होगी। वह यात्रा करना चाहता है सो यात्रा का योग नहीं है। शनिवार को पवन पूत का पूजन करने से यात्रा हो सकेगी। आगे रामकृपा बलवती है।

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न यात्रा सम्बन्धी कनिष्ठ है। सो गोचरानुसार उसके यात्रा का योग नहीं है। वह यात्रा नहीं कर सकेगा सूर्यदेव को प्रसन्न करने का उपाय करो। मनोकामना सिद्ध होगी। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० १०

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्त्ता का प्रश्न विद्या संबंधी है। क्रूर ग्रहों के होने से उसको विद्या का योग नहीं है। यानी पढ़ नहीं सकेगा। चन्द्रदेव के प्रसन्न होने पर ही विद्या के योग की सम्भावना है अतः उन्हें प्रसन्न करो। आगे राम कृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न विद्या संबंधी है गोचरानुसार विद्या का योग उत्तम है। सो निश्चय करके विद्या आवेगी जहां तक हो सके

मंगलदेव को प्रसन्न करने का उपाय करो मनोकामना पूर्ण होगी। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्त्ता का प्रश्न विद्या संबंधी है। क्रूर ग्रहों के होने से उसको विद्या का योग नहीं है यानी विद्या नहीं आवेगी। बुद्ध देव के प्रसन्न होने पर ही विद्या के योग की सम्भावना है अतः उन्हें प्रसन्न करो। आगे रामकृपा बलवतीहै।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्त्ता का प्रश्न विद्या संबंधी है। प्रश्न मध्यम है। गोचरानुसार विद्या थोड़ी आवेगी। बृहस्पति के प्रसन्न करने से मनोकामना सिद्ध होगी। गुरुकी शान्ति करो आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्त्ता का प्रश्न विद्या संबंधी है। उसके प्रश्न का फल उत्तम होने से निश्चय करके विद्या आवेगी। जहां तक हो सके शुक्रदेव के प्रसन्न करने का उपाय करें मनोकामना सिद्ध होगी। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न विद्या सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से से निश्चय करके विद्या आवेगी। शनि देव के पूजन करने से कार्य में सफलता होगी।आगे रामकृपा बलवतीहै।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न विद्या संबंधी है। निसन्देह आपके प्रश्न का फल बुरा होने से विद्या नहीं आवेगी। परन्तु सूर्यदेव के प्रसन्न करने पर विद्या आने की सम्भावना है। सो सूर्यदेव का पूजन करो। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ७८

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न विवाह संबंधी है। प्रश्न का फल बुरा होने से विवाह नहीं होवेगा। यदि सोमवार का व्रत किया जाय तो चन्द्र देव के प्रसन्न होनेपर मनोकामना सिद्ध होगी। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न विवाह संबंधी है। प्रश्न काफल उत्तम होने से

विवाह शीघ्र होगा। तथापि मंगलदेव को प्रसन्न करो मनोकामना पूर्ण होगी। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न विवाह संबंधी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से विवाह बड़ी उम्रमें होगा। बुधदेव के प्रसन्न करने पर ही विवाह हो सकेगा। अतः बुधवार का व्रत करें आगे राम कृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न विवाह सम्बन्धी है प्रश्न का फल कुछ उत्तम होने से विवाह होगा। गुरुदेव के पूसन्न होने का उपाय करें मनोकामना सिद्ध होगी। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न विवाह सम्बन्धी है। प्रसन्न का फल उत्तम होने से विवाह निश्चय करके शीघ्र होगा। ऐसा ग्रह फल है। शुक्रदेव को पूसन्न करें मनोवांछित फल प्राप्त होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न विवाह सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से विवाह होने की सम्भावना है। शनिदेव को प्रसन्न करने से कार्य में शीघ्रता होगी। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न विवाह सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से विवाह नहीं होगा। सूर्यदेव को प्रसन्न करनेसे सफलता की संभावना है। अतः सूर्यदेव का पूजन करो। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० १

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न ग्राम सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से ग्राम नहीं मिलेगा। चन्द्रदेव को प्रसन्न करने का उपाय करो। शायद कार्य सफलता मिल सकेगी। आगे राम कृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले

का प्रश्न ग्राम सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य सफल होने की सम्भावना है। मङ्गलदेव को प्रसन्न करें तो कार्य सफल होगा। अतः भौमवार का व्रत करें। आगे राम कृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न ग्राम सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य निश्चय सफल होगा अर्थात ग्राम मिलेगा तथापि बुधदेव की शान्ति करें कार्य में बाधा नहीं आवेगी। आगे राम कृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न ग्राम सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से ग्राम अवश्य मिलेगा तथापि गुरुवार का व्रत करने से कार्य में बाधा न आवेगी। आगे राम कृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है प्रश्न का फल भी मध्यम होने कार्य की सफलता में शंकर है प्रश्न ग्राम सम्बन्धी है। सो

शुक्रदेव की शान्ति करने से कार्य सफल होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न अधम है। प्रश्न ग्राम सम्बन्धी है। प्रश्न का फल भी अधम होने से कार्य नहीं होगा। शनिवार को हनुमान का पूजन करने से कार्य होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है प्रश्न ग्राम सम्बन्धी हैं। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। रविवार का व्रत करने से कार्य सफल हो सकेगा आगे राम कृपा बलवती है॥

१ प्र० ४२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न धन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य नहीं होगा सोमवार को महादेव का

पूजन करने से कार्य सफल हो सकेगा। आगे राम कृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्नधन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से धन कमती पटेगा। मंगल को प्रसन्न करें। मनोकामना पूर्ण होगी। आगे रामकृपा बलवतो है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न धन सम्बन्धी है प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। बुध देव को प्रसन्न करें। आगे राम कृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न धन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। गुरुदेव को प्रसन्न करें। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है प्रश्न करने वाले

का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न धन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। शुक्रदेव को प्रसन्न करें। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम होने से फल शीघ्र मिलेगा। प्रश्न का फल उत्तम है। धन अवश्य मिलेगा शनिदेव को हनुमान का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न धन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल कनिष्ठ होने से कार्य के सफल होने की आशंका है। सूर्यदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न बुरा है। प्रश्न जन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य नहीं होगा। सोमवार को महादेव का पूजन करें। आदमी मिल सकेगा आगे राम कृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न जन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। बुधदेव को प्रसन्न करने से कार्य में बाधा नहीं होगी। आगे राम कृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है प्रश्न जन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। गुरुदेव को प्रसन्न करें। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न जन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम न होने से कार्य में सफलता नहीं मिलेगी। शुक्र देव को प्रसन्न होने से कार्य सफल होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न अधम है। प्रश्न मनुष्य सम्बधी है। प्रश्न का

फल बुरा होने से कार्य नहीं होगा। शनिदेव का पूजन करें। कार्य सफल होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न अधम है। प्रश्न मनु सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम है। प्रश्न मनु सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। सूर्य देव का पूजन करें आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न अधम है। प्रश्न अर्थ सम्बन्धी है। प्रश्न का फल भी बुरा होने से कार्य नहीं होगा। सोमवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ५३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न मध्यम है प्रश्न धन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। भौमवार का पूजन करें। कार्य सिद्ध होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्त्ता का

प्रश्न उत्तम है। अर्थ सम्बन्धी कार्य है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। बुधदेव को प्रसन्न करें। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्त्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न अर्थ सम्बन्धी कार्य है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। गुरुदेव को प्रसन्न करें। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न अर्थ सम्बन्धी कार्य है प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य होने में देरी है। शुक्रदेव को प्रसन्न करने से कार्य सफल होगा आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्त्ता का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न अर्थ सम्बन्धी कार्य है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य होने में आशंका है। शनिदेव को प्रसन्न करें कार्य होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्त्ता का प्रश्न अधम है प्रश्न अर्थ सम्बन्धी कार्य है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य नहीं होगा सो देवी की उपासना रविवार को करें। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ६७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्त्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न सन्तान सम्बन्धी हैं। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य नहीं होने का है। चन्द्रदेव के पूजन करने से कार्य सफल होवेगा। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न सन्तान सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य से सफलता कम होगी। भौम-देव का पूजन करें। कार्य सफल होगा आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न सन्तान सम्बन्धी है। प्रश्न का

फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। बुधदेव का पूजन करो। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न सन्तान सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। गुरु देव का पूजन करो। आगे। रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न सन्तान सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य विलम्ब से होगा। शुक्रदेव का पूजन करें। कार्य सफल होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न सन्तान सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। शनिवार को हनुमान का पूजन करने से कार्य हो सकता है। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न कनिष्ठ है। प्रश्न सन्तान सम्बन्धी है। प्रश्न का फल भी बुरा होने से कार्य में सफलता नहीं मिलेगी। सूर्य देव का पूजन करने से कार्य होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० २१

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न अर्थ सम्बन्धी कार्य है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य में सफलता नहीं मिलेगी। चन्द्रवार को त्रिपुरारी का पूजन करने से कार्य होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न अर्थ सम्बन्धी कार्य है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य कुछ अंशो में होगा। भौमवार को भवानी का पूजन करें कार्य होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले

का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न अर्थ सम्बन्धी कार्य है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। बुधदेव की शान्ति करें। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न अर्थ सम्बन्धी कार्य होगा। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। गुरुदेव की शान्ति करें। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। अर्थ सम्बन्धी प्रश्न है। कार्य आसानी से नहीं होगा। शुक्रदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न नौकरी सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य नहीं हो सकेगा। शनिवार को हनुमानजी का पूजन करने से कार्य सफल होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न उत्तम होने से कार्य भी उत्तम है। कार्य अर्थ सम्बन्धी है। परन्तु फल बुरा होने से कार्य नहीं होगा। भवानी का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० १८

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न उत्तम नहीं है। प्रश्न शिकार सम्बन्धी है। फल गोचरानुसार अच्छा नहीं है। सो कार्य नहीं होगा। चन्द्रदेव का पूजन करें। कार्य हो सकेगा। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न शिकार संबन्धी है। फल गोचरानुसार मध्यम है सो कार्य विलंब से होगा। विष्णु की पूजा मङ्गलवार को करने से कार्य सिद्ध होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न शिकार संबंधी है। कार्य सफल

होगा । बुधवार को ब्रह्मा की पूजा करें। आगे रामकृपा बलवती हैं।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न उत्तम है । प्रश्न शिकार सम्बन्धी है। कार्य सफल होगा । गुरुवार को गौ का पूजन करें । आगे रामकृपा बलवती है ।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न शिकार सम्बन्धी है । प्रश्न का फल गोचरानुसार मध्यम होने से कार्य होने में द्विविधा है। शुक्र की शान्ति करने से मनोकामना सिद्ध होगी। आगे रामकृपा बलवती है ।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न शिकार सम्बधी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य नहीं होगा । शनिवार को स्नेह-दान करने से सफलता मिल सकती है। आगे रामकृपा सर्वोपरि है ।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का

प्रश्न बुरा है। प्रश्न शिकार सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य नहीं होगा। सूर्य देव का जप करने से कार्य में सफलता मिलेगी: आगे रामकृपा सर्वोपरि है।

१ प्र० १२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न का फल बुरा होने से मनोवांछित कार्य नहीं होगा। हाथ में बुराई रहेगी। चंद्र का पूजन सिद्धि दायक है आगे रामकृपा बलवान है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। गोचरानुसार प्रश्न का फल मध्यम होने से मान होने द्विविधा है मङ्गल का व्रत वांछनीय है। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न उत्तम है। गोचरानुसार प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य में प्रशंसा होगी तथापि बुध का पूजन उचित है। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का

प्रश्न उत्तम है अतः निश्चय करके प्रसंशा होगी । अब जहां तक हो सके शुक्रदेव के प्रसन्न होने का उपाय करो जिससे कार्य में सरलता होगी।आगे रामकृपा बलवतीहै।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न का फल उत्तम होने से निश्चय करके प्रशंसा होगी। अब शनिदेव को प्रसन्न करने का उपाय करो जिससे कार्य में सरलता होगी। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न कनिष्ठ है। अतः प्रश्न का फल कनिष्ठ होने से निश्चय करके प्रशंसा नहीं होगी। तथापि सूर्य देव के प्रसन्न करने का उपाय करो जिससे सफलता की सम्भावना है। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न कनिष्ठ है। प्रश्न का फल कनिष्ठ होने से निश्चय करके सुख नहीं मिलेगा। अब चन्द्रदेव के प्रसन्न करने से सुख मिलने की सम्भावना है। अतः चन्द्रदेव को प्रसन्न करने का उपाय करो आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न का फल मध्यम उत्तम होने से निश्चय करके सुख मिलेगा। अब मंगलदेव के प्रसन्न करने से अधिक सुख मिलेगा। आगे रामकृपा बलवतीहै।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न कनिष्ठ है। प्रश्न का फल कनिष्ठ होने से निश्चय करके सुख नहीं मिलेगा। अब बुधदेव के प्रसन्न करने से सुख मिलने की संभावना है। अतः बुधदेव को प्रसन्न करने का उपाय करो। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न का फल उत्तम होने से निश्चय करके सुख मिलेगा। अब गुरुदेव के प्रसन्न होने से अधिक सुख मिलेगा। अतः गुरुदेव के प्रसन्न करने का उपाय करो। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न का फल उत्तम होने से निश्चय

करके सुख मिलेगा। अब शुक्रदेव के प्रसन्न होने पर शीघ्र सुख मिलेगा। अतः शुक्रदेव के प्रसन्न करने का उपाय करो। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न का फल उत्तम होने से निश्चय करके सुख मिलेगा। अब शनिदेव के प्रसन्न करने से अधिक सुख मिलेगा अतः शनिदेव के प्रसन्न करने का उपाय करो आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न कनिष्ठ है। प्रश्न का फल कनिष्ठ होने से सुख नहीं मिलेगा। अब सूर्यदेव के प्रसन्न करने से सुख मिलने की सम्भावना है अतः सूर्यदेव के प्रसन्न करने का उपाय करो। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ५९

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न कनिष्ठ है। अब प्रश्न का फल कनिष्ठ होने से निश्चय करके धन नहीं मिलेगा। अब चन्द्रदेव को

प्रसन्न करने से धन मिलने की सम्भावना है। अतः चन्द्रदेव के प्रसन्न करने का उपाय करो आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न का फल उत्तम होने से धन मिलेगा॥ अब मङ्गलदेव के प्रसन्न होनेसे शीघ्र धन मिलेगा। अतः मङ्गलदेव के प्रसन्न करने का उपाय करो। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न कनिष्ठ होंने से प्रश्न का फल कनिष्ठ है। अतः धन निश्चय करके नहीं मिलेगा। अब बुधदेव की कृपा से धन मिलने की संभावना है। अतः बुधदेव को प्रसन्न करने का उपाय करो। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न का फल उत्तम होंने से निश्चय करके धन मिलेगा। अब गुरुदेव के प्रसन्न होंने से धन

शीघ्र मिलेगा । अतः गुरुदेव के प्रसन्न करने का उपाय करो । आगे रामकृपा बलवती है ।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तमहै। प्रश्न का फल उत्तम होने से धन निश्चय करके मिलेगा । अब शुक्रदेव के प्रसन्न होने से धन अधिक मिलेगा। अतः शुक्रदेव के प्रसन्न करने का उपाय करो। आगे रामकृपा बलवती है ।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है । प्रश्न का फल उत्तम होने से निश्चय करके धन मिलेगा । अब शनिदेव के प्रसन्न होने से अधिक धन मिलेगा । अतः शनिदेव के प्रसन्न करने का उपाय करो । आगे रामकृपा बलवती है ।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न कनिष्ठ है । प्रश्न का फल कनिष्ठ होंने से निश्चय करके धन नहीं मिलेगा । अब सूर्यदेव के प्रसन्न होने से धन मिलने की सम्भावना है । अतः सूर्यदेव को प्रसन्न करने का उपाय करो। आगे रामकृपा बलवतीहै ।

१ प्र० २

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न कनिष्ठ है। अतः प्रश्न का फल कनिष्ठ होने से रोग नहीं मिटेगा। अब चन्द्रदेव के प्रसन्न होने से रोग मिटने की सम्भावना है। अतः चन्द्रदेव के प्रसन्न करने का उपाय करो। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है प्रश्न कर्त्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न रोग सम्बन्धी है। फल बुरा होने से रोग मिटने में द्विविधा है। मंगल के प्रसन्न होने से रोग मिट सकता है। मंगल की शान्ति करें। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न रोग सम्बन्धी है। फल उत्तम होने से रोग शीघ्र मिटेगा। बुधदेव का प्रसन्न करने से शीघ्रता होगी। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न रोग सम्बन्धी है। फल उत्तम होने

से रोग अवश्य मिटेगा। तथापि गुरुदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न रोग सम्बन्धी है। फल मध्यम होने से कार्य में द्विविधा होगी। शुक्रदेव के प्रसन्न होने से कार्य अवश्यंभावी है। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न रोग सम्बन्धी है। फल मध्यम होने से कार्य होने में बाधा है। शनिदेव का पूजन करें। कार्य सफल होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न रोग सम्बन्धी है। फल बुरा होने से कार्य नहीं होगा। भवानी का रविवार को पूजन करने से रोग मिटेगा। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ४१

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता प्रश्न उत्तम है। प्रश्न रण सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा

होने से कार्य नहीं होगा। चन्द्रदेव का पूजन करें। मनोकामना पूर्ण होगी।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न रणसम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य में द्विविधा है। भौमवार का व्रत करें। आशा पूर्ण होगी।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न रण सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अच्छा होने से कार्य होगा। बुधवार का व्रत करें। आशा पूर्ण होगी।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न रण सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अच्छा होने से कार्य होगा। गुरुदेव का व्रत करें। आशा पूर्ण होगी।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न उत्तम है प्रश्न रण सम्बन्धी है। प्रश्न फल मध्यम

होने से कार्य में द्विविधा है। शुक्रदेव का पूजन करें। आशा पूर्ण होगी।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न रण सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य नहीं होगा। शनिदेव को पवनपूत का पूजन करें। आशा पूर्ण होगी।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न रण सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य होने में बाधा है। सूर्य देव का पूजन करें। आशा पूर्ण होगी।

१ प्र० २२

आचार्य महोदय का कथन है प्रश्नकर्ता का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न पारस्परिक संबंध संबंधी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य होने में द्विविधा है। सोमवार का व्रत करें। मनोकामना पूर्ण होगी।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न पारस्परिक सम्बन्ध सम्बन्धी है। प्रश्न

का फल मध्यम होने से कार्य के होने से द्विविधा है। मंगल को ब्रह्मा का पूजन करें मनोकामना पूर्ण होगी।

३

आचार्य महोदय का कथन है प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पारस्परिक सम्बन्ध सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा तथापि बुधदेव को प्रसन्न करें। आशा पूर्ण होगी।

४

आचार्य महोदय का कथन है प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पारस्परिक सम्बन्ध सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा तथापि गुरु-देव का पूजन करें। आशा पूर्ण होगी।

५

आचार्य महोदय का कथन है प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पारस्परिक सम्बन्ध सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य सफल होगा शुक्रदेव का पूजन करें। आशा पूर्ण होगी।

६

आचार्य महोदय का कथन है प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पारस्परिक सम्बन्ध सम्बन्धी है। प्रश्न

का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। शनिदेव का पूजन करें। आशा पूर्ण हो सकेगी।

७

आचार्य महोदय का कथन है प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पारस्परिक संबंध संबंधी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य में सफलता नहीं मिलेगी। दुर्गा का पूजन करें। आशा पूर्ण होगी।

१ प्र० ५०

आचार्य महोदय का कथन है प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न तीर्थ संबंधी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य में सफलता नहीं मिलेगी। चन्द्रदेव का पूजन करें। कार्य सफल होगा।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न तीर्थ संबंधी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य में सफलता आसानी से नहीं मिलेगी। मङ्गलवार को पूजन करें आशा पूर्ण होगी।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न तीर्थ संबंधी है। प्रश्न का

फल उत्तम होनेसे कार्य सफल होगा बुधवार को स्वामी कार्तिकेय का पूजन करें। आशा पूर्ण होगी।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न तीर्थ सम्बधी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। तथापि गुरुवार को गौ का पूजन करें।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न तीर्थ सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य में द्विविधा है। शुक्रदेव का पूजन करें। इच्छा पूर्ण होगी।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है प्रश्न तीर्थ सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य सफल नहीं होगा। शनिदेव का पूजन करने से कार्य सफल होसकेगा। आगे राम-कृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले

का प्रश्न बुरा है। प्रश्न तीर्थ सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य सफल नहीं होगा। रविदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ५६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है प्रश्न आत्म सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से मनोकामना पूर्ण नहीं होगी। चन्द्र-देव का पूजन करने से कार्य सफल होगा।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न आत्म सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से मनोकामना पूर्ण होगी। मङ्गल-देव का पूजन करो तभी काम हो सकेगा।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न आत्म सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अच्छा होने से मनोकामना सिद्ध होगी। बुधदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले

का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न आत्मा संबंधी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। गुरुदेव का पूजन अनिवार्य है। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न आत्मा संबन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होने में बाधा है। शुक्रदेव का पूजन करना योग्य है। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न आत्म संबंधी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य न हो सकेगा। शनिवार को हनुमान का पूजन अनिवार्य है। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न आत्म संबन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से मनोकामना पूर्ण नहीं होगी। भवानी का पूजन करें। कार्य सफल होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ६०

श्री आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न कनिष्ठ है। प्रश्न छुट्टी मिलेगी कि नहीं है। प्रश्न का फल कनिष्ट होने से आपको निश्चय करके छुट्टी नहीं मिलेगी। अब चन्द्रदेव के प्रसन्न होने से छुट्टी मिलने की सम्भावना है। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न है। छुट्टी मिलेगी कि नहीं अब प्रश्न का फल उत्तम होने से छुट्टी निश्चय करके मिलेगी। अब मंगल देव के पूजन करने से कार्य में सरलता होगी। आगे राम-कृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न है। छुट्टी मिलेगी कि नहीं प्रश्न का फल कनिष्ठ होने से निश्चय करके छुट्टी नही मिलेगी। अब बुध देव को प्रसन्न करने से कार्य हो सकता है। आगे राम-कृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का

प्रश्न है। छुट्टी मिलेगी कि नहीं प्रश्न का फल उत्तम होने से निश्चय करके छुट्टी मिलेगी। अब गुरुदेव के प्रसन्न करने से छुट्टी सरलता से मिल जायगी। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न है। छुट्टी मिलेगी कि नहीं प्रश्न का फल उत्तम होने से निश्चय करके छुट्टी मिलेगी। अब शुक्रदेव के प्रसन्न करने से कार्य में सरलता होगी। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न है। छुट्टी मिलेगी कि नहीं प्रश्न का फल उत्तम होने से निश्चय करके छुट्टी मिलेगी। अब शनिदेव को प्रसन्न करने से कार्य शीघ्र होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न छुट्टी मिलेगी कि नहीं है। प्रश्न का फल कनिष्ट होने से निश्चय करके छुट्टी मिलेगी नहीं। अब सूर्य देव के प्रसन्न करने से छुट्टी मिलने की संभावना है। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ६०

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न कुशल होगी है। प्रश्न का फल कनिष्ठ होने से निश्चय करके कुशल नहीं होगी। अब चन्द्रदेव के प्रसन्न करने से कार्य में सरलता होगी।आगे रामकृपा बलवतीहै।

२

आचार्य महोदय का कथन है प्रश्न कर्त्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न आत्म सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य सफल होने में शंका है। सोमवार का व्रत अभीष्ट है। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न आत्म सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। तथापि बुधदेव का पूजन अभीष्ट है। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न आत्म सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। तथापि गुरुदेव का पूजन अभीष्ट है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न आत्म सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य सफल हो सकेगा। परन्तु शुक्रदेव का पूजन अभीष्ट है। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न आत्म सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य सफल नहीं होगा। शनिवार को पवनपूत का पूजन अभीष्ट है। आगे रामकृपा बलवतीहै।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न आत्म सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य सफल नहीं होगा। रविदेव का पूजन अभीष्ट है। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ५४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पुत्र सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य की सफलता में बाधा है। सोमवार का व्रत अभीष्ट है आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है प्रश्न पुत्र सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य के सफल होने में द्विविधा है। मंगलदेव का व्रत करो। कार्य सफल होगा आगे राम-कृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पुत्र सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य के सफल होने में कोई शंका नहीं है। बुधदेव का पूजन अभीष्ट है। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पुत्र सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। गुरुदेव का पूजन अभीष्ट है। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पुत्र सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य कम सफल होगा। शुक्रदेव

का पूजन अभीष्ट है। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पुत्र सम्बन्धी है प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य सफल नहीं होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न पुत्र सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य नहीं होगा। रविवार का व्रत अभीष्ट है। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ७५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न धन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य नहीं होगा। चन्द्रदेव का पूजन करो। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न धन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य कम सफल होगा। मंगलदेव का पूजन करो। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न धन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। बुधदेव का पूजन अभीष्ट है। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न धन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न धन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम न होने से कार्य सफल होने में द्विविधा है। शुक्र-देव का पूजन अभीष्ट है। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न धन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य नहीं होगा। शनिदेव का पूजन अभीष्ट है। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न अधम है। प्रश्न धन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य नहीं होगा। रविदेव का पूजन अभीष्ट है। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ७७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न अधम है। प्रश्न राज्य सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य नहीं होगा। चन्द्रवार का व्रत अभीष्ट है। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न राज्य सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य होने में द्विविधा है। भौमवार का व्रत अभीष्ट है। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न राज्य सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। बुधदेव का व्रत अभीष्ट है। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न राज्य सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। गुरुवार का व्रत अभीष्ट है। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न राज्य सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य में द्विविधा है। शुक्रदेव का व्रत अभीष्ट है। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न राज्य सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य होने में कम आशा है। शनिवार का व्रत अभीष्ट है। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न अधम है। प्रश्न राज्य सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य होने में आशा नहीं है। रविवार का व्रत अभीष्ट है। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न अधम है। प्रश्न स्त्री सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य नहीं होगा। चन्द्रदेव को प्रसन्न करें। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न स्त्री सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य नहीं होगा। मंगलदेव को प्रसन्न करें। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है प्रश्न स्त्री सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तमहोने से कार्य होगा। बुधदेव को प्रसन्न करें। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न स्त्री सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। गुरुदेव को प्रसन्न करें।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले

का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न स्त्री सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य में द्विविधा है। शुक्रदेव का पूजन करें आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न स्त्री सम्बन्धी। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य देरी से होगा। शनिदेव का पूजन अभीष्ट है। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न स्त्री सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य में सफलता नहीं होगी। सूर्य-देव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ४३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न मकान सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य नहीं होगा। चन्द्रवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले

का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न मकान सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य देर से होगा। मंगलवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न मकान सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। बुधवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न मकान सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य में सफलता होगी। गुरुवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न मकान सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य में द्विविधा है। शुक्रवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने

वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न मकान सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य में बाधा है। शनिवार का व्रत करें आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न मकान सम्बधी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य नहीं होगा। रविवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ७३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न पुत्र सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य नहीं होगा। सोमदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न पुत्र सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य में द्विविधा है। मंगलदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है प्रश्न पुत्र संबन्धी है। प्रश्न का फल

उत्तम होने से कार्य होगा। बुधदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है प्रश्न पुत्र सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। गुरुदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वालें का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पुत्र सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य में द्विविधा है। शुक्रदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पुत्र सम्बन्धी है। गोचरानुसार प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य होने में देर होगी। शनि देव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्त्ता क प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पुत्र सम्बन्धी है। गोचरानुसार

प्रश्न का फल अधम होने से कार्य होने में सफलता नहीं होगी। रविदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ६४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न आत्म सम्बन्धी है। गोचरानुसार प्रश्न का फल अधम होने से कार्य होने में सफलता नहीं होगी। चन्द्रदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न मध्यम है प्रश्न आत्म सम्बन्धी है। गोचरानुसार प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य में द्विविधा है। मङ्गलदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रन उत्तम है। प्रश्न आत्म संबन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। बुधदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का

प्रश्न उत्तम है। प्रश्न आत्म सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। गुरुदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न आत्म सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य सफल होगा। शुक्रदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न आत्म संबन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य में द्विविधा है। शनिदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न आत्म संबन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य में सफलता नहीं मिलेगी। दिवाकर का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ३२-२६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले

का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न व्यापार संबन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य में सफलता नहीं मिलेगी। सोम का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न व्यापार संबन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य में सफलता देरी से होगी। भौम का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न व्यापार संबन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य में सफलता होगी। बुधदेव का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न व्यापार सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य में सफलता होगी। गुरुदेव का पूजन करें। आगे राम कृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले

का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न व्यापार सम्बन्धी है। प्रश्नका फल मध्यम होने से कार्य में देरी होगी। शुक्रदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न व्यापार सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य नहीं होगा। शनिदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न व्यापार सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य नहीं होगा। रविदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ६१

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न देह सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य नहीं होगा। चन्द्रदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले

का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न जीवन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य नहीं होगा। मङ्गलदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न जीवन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अच्छा होने से कार्य होगा। बुधदेवका पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न जीवन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अच्छा होने से कार्य होगा। गुरुदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न जीवन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अच्छा न होने से कार्य में बाधा है। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न जीवन सम्बन्धी है। प्रश्न

का फल मध्यम होने से कार्य में द्विविधा है। शनिदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न अधम है। प्रश्न जीवन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य नहीं होगा। रविदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न जुआ सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। चन्द्रवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न जुआ सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य देर से होगा। मंगलवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न जुआ सम्बन्धी है। प्रश्न का

फल उत्तम होने से कार्य होगा। बुधदेव का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न जुआ सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। गुरुवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य कुछ सफल होग। शुक्रवार का व्रत करें। आगे राम-कृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न जुआ सम्बन्धी है। गोचरानुसार प्रश्न का फल अधम होने से कार्य होने में द्विविधा है। शनिवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न जुआ सम्बन्धी है। प्रश्न का फल

अधम होने से कार्य नहीं होगा। रविवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ६८

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न जमीन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। चन्द्रवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले प्रश्न का उत्तम है प्रश्न जमीन सम्बन्धी है प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य कुछ होगा। मंगलवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न जमीन संबन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। बुधवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न जमीन सम्बन्धी है। प्रश्न का

फल उत्तम होने से कार्य होगा। गुरुवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न जमीन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कुछ कार्य होगा। शुक्रवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न जमीन संबंधी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य में द्विविधा है। शनिवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न जमीन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य नहीं होगा। रविवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ७५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न धन सम्बन्धी है। गोचरा-

नुसार प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य नहीं होगा। चन्द्रदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न धन सम्बन्धी है। गोचरानुसार प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। मंगलदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न धन सम्बन्धी है। गोचरानुसार प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। बुधदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न धन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। गुरुदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न धन सम्बन्धी है। प्रश्न का

फल मध्यम होने से कार्य सफल होने में द्विविधा है। शुक्रदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है प्रश्न धन संबंधी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य कुछ होगा। शनिदेव का पूजन करने से कार्य सफल होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है प्रश्न धन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल गोचरानुसार अधम होने से कार्य नहीं होगा। रविदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है॥

१ प्र० ७८

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पशु संबन्धी है। प्रश्न का फल गोचरानुसार निकृष्ट होने से कार्य नहीं होगा। चन्द्रदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पशु सम्बन्धी है। प्रश्न का

फल गोचरानुसार मध्यम होने से कुछ कार्य होगा। मंगलदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है प्रश्न पशु सम्बन्धी है। गोचरानुसार प्रश्न का फल श्रेष्ठ होने से कार्य सफल होगा। तथापि बुधदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पशु सम्बन्धी है। गोचरानुसार प्रश्न का फल श्रेष्ठ होने से कार्य सफल होगा। तथापि गुरुदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पशु सम्बन्धी है। गोचरानुसार प्रश्न का फल मध्यम होने से कुछ कार्य सफल होगा। शुक्रदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न पशु सम्बन्धी है। गोचरानुसार प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य के होने में द्विविधा

है। शनिदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न पशु सम्बन्धी है। गोचरानुसार प्रश्न का फल निकृष्ट होने से कार्य के होने में असंभावना है। कार्य नहीं होगा। सूर्यदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ८४-६६-६७-८६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न भाई सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। चन्द्रवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न भाई सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य कुछ देर में होगा। मंगलवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न भाई सम्बन्धी है। प्रश्न का

फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। बुधवारका व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न भाई सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। गुरुवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न भाई सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम न होने से कार्य सफल होने में द्विविधा है शुक्रवार का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है प्रश्न भाई संबन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम न होने से कार्य सफल नहीं होगा। शनिवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न भाई संबन्धी है। प्रश्न का

फल उत्तम न होने से कार्य सफल नहीं होगा। रविवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ३६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करनेवाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न मुकदमा सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य सफल होगा। चन्द्रवार का पूजन अभीष्ट है। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करनेवाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न मुकदमा संबंधी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य सफल नहीं होगा। मङ्गलवार का व्रत अभीष्ट है। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न मुकदमा सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। बुधवार का व्रत अभीष्ट है। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न मुकदमा सम्बन्धी है। प्रश्न

का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। गुरुवार का व्रत अभीष्ट है। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न मुकद्‌मा सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य कुछ सफल होगा। शुक्रवार का व्रत अभीष्ट है। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न मुकद्‌मा सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अनिष्ट होने से कार्य सफल नहीं होगा।शनिवार का व्रत अभीष्ट है। आगे रामकृपा बलवती हैं।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न मध्यम है। प्रश्न मुकद्‌मा सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अनिष्ट होने से कार्य नहीं होगा। रविवार का व्रत अभीष्ट है। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ४६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न विक्री से सम्बन्धित है। प्रश्न का फल कनिष्ट

होने से निश्चय करके विक्री नहीं होगी। चन्द्रदेव के पूजन करने से विक्री होने की संभावना है। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न बिक्री सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से विक्री निचश्य करके होगी। मङ्गलदेव के पूजन करने से विक्री अधिक होगी। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न बिक्री संबन्धी है। प्रश्न का फल कनिष्ट होने से बिक्री निश्चय करके नहीं होगी। बुधदेव के पूजन करने से विक्री होने की संभावना है। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न बिक्री संबन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से बिक्री निश्चय करके होगी। गुरुदेव के पूजन करने से बिक्री अधिक होगी। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का

प्रश्न बिक्री संबन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से बिक्री निश्चय करके होगी। शुक्रदेव के प्रसन्न करने से बिक्री अच्छी होगी। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न बिक्री सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से बिक्री निश्चय करके होगी। शनिदेव के प्रसन्न करने से बिक्री शीघ्र होगी। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रन कर्ता का प्रश्न बिक्री सम्बन्धी है। प्रश्न का फल कनिष्ट होने से निश्चय करके बिक्री होगी। सूर्यदेव के प्रसन्न करने से बिक्री होने की सम्भावना है। आगे राम कृपा बलवती है।

१ अ० २०

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न खेती संबंधी है। प्रश्न का फल कनिष्ट होने से खेती निश्चय करके अच्छी नहीं होगी। चन्द्रदेव के प्रसन्न करने से अच्छी खेती होने की सम्भावना है। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का

प्रश्न खेती संबन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से खेती निश्चय करके अच्छी होगी। अब मंगलदेव के पूजन करने से अधिक भाग में होगी।आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथनहै कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न खेती संबन्धी है। प्रश्न का फल कनिष्ट होने से खेती निश्चय करके अच्छी नहीं होगी। बुधदेव के प्रसन्न करने से अच्छी खेती होने की संभावना है। आगे राम कृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न खेती सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से खेती निश्चय करके अच्छी होगी। गुरुदेव के प्रसन्न करने से खेती अच्छी किस्म की होगी। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न खेती संबन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होनेसे खेती निश्चय करके अच्छी होगी। शुक्रदेव के प्रसन्न करने से खेती अच्छी किस्म की होगी।आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न खेती सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से खेती निश्चय करके अच्छी होगी। शनिदेव के प्रसन्न करने से अधिक खेती होने की संभावना है। आगे राम-कृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न खेती संबन्धी है। प्रश्न का फल कनिष्ट होने से खेती निश्चय करके अच्छी नहीं होगी। सूर्यदेव के पूजन करने से खेती अच्छी होने की सम्भावना है। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ६२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न शत्रु संबन्धी है। प्रश्न का फल कनिष्ट होने से शत्रु नष्ट नहीं होंगे। अब चन्द्रदेव के प्रसन्न करने से शत्रु नष्ट होने की सम्भावना है। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का

प्रश्न शत्रु संबन्धी है प्रश्न का फल उत्तम होने से शत्रु निश्चय करके नष्ट होंगे। अब मंगलदेव का पूजन करने से शत्रु शीघ्र नष्ट हो जाँयगे। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न शत्रु सम्बन्धी है प्रश्न का फल कनिष्ट होने से शत्रु निश्चय करके नष्ट ही होंगे। बुधदेव के प्रसन्न करने से नागुन फुहोंने की सम्भावना है। आगे राम-कृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न शत्रु सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से निश्चय करके नष्ट होंगे। गुरुदेव के प्रसन्न करने से शत्रु शीघ्र नष्ट होंगे। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न शत्रु सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से शत्रु निश्चय करके नष्ट होंगे। शुक्रदेव के प्रसन्न करने से शत्रु शीघ्र नष्ट होने की सम्भावना है। आगे राम-कृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न शत्रु सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से शत्रु निश्चय करके नष्ट होंगे। अब शनिदेव के प्रसन्न करने से शत्रु शीघ्र नष्ट होंगे।आगे रामकृपा बलवतीहै।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न शत्रु सम्बन्धी है। प्रश्न का फल कनिष्ट होंने से शत्रु निश्चय करके नष्ट नहीं होंगें। अब सूर्यदेव के पूजन करने से शत्रु नष्ट होंने की सम्भावना है। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० २०

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न धन सम्बन्धी है प्रश्न का फल कनिष्ट होंने से गढ़ा हुआ धन नहीं मिलेगा। अब चन्द्रदेव के प्रसन्न करने से गढ़ा धन मिलने की सम्भावना है। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न धन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होंने से

गढ़ा धन न मिलेगा। अब मंगलदेव के प्रसन्न करने से गढ़ा धन अधिक मिलेगा। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न धन संबंधी है। प्रश्न का फल कनिष्ट होने से गढ़ा हुआ धन नहीं मिलेगा। अब बुधदेव के प्रसन्न करने से गढ़े हुए धन के मिलने की संभावना है। आगे राम-कृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न धन संबन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से गढ़ा हुआ धन मिलेगा। अब गुरुदेव के प्रसन्न करने से गढ़ा हुआ धन अधिक मिलने की सम्भावना है। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न धन संबन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से गढ़ा हुआ धन मिलेगा। शुक्रदेव के प्रसन्न करने से गढ़ा हुआ धन शीघ्र मिलेगा। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का

प्रश्न धन संबंधी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से गढ़ा हुआ धन मिलेगा। शनिदेव के प्रसन्न करने से गढ़ा हुआ धन अधिक मिलेगा। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न धन संबंधी है। प्रश्न का फल कनिष्ट होने से गढ़ा हुआ धन नहीं मिलेगा। सूर्यदेव का पूजन करने से गढा हुआ धन मिलने की सम्भावना है। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ६६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करनेवाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न योग सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने योग सिद्ध नहीं होगा। चन्द्रदेव का पूजन करने से कार्य सिद्ध होगा। आगे रामकृपा बलवती।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करनेवाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न योग सम्बंधी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से योग सिद्ध होने में द्विविधा है। मंगल का पूजन करने से कार्य सिद्ध होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न योग सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से योग सिद्ध होगा। बुध का पूजन करने से कार्य शीघ्र होगा आगे रामकृपा बलवती हैं।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न योग सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से योग सिद्ध होगा। गुरू का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न योग सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य कुछ सिद्ध होगा। शुक्रवार का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न योग सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। शनि का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न योग सम्बधी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। रवि का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० १३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न आत्मज्ञान सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। चन्द्रवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वालों का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न आत्मज्ञान सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य होने में द्विविधा है। मंगलवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न आत्मज्ञान सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। बुधवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न आत्मज्ञान सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा, गुरुवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न आत्मज्ञान सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। शुक्रवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न आत्मज्ञान सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। शनिवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न आत्मज्ञान सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य नहीं हगा। रविवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ७९

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न न्याय सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। अग्निदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न न्याय सम्बन्धो है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य के होने में द्विविधा है। ब्रह्मा की पूजा करें। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न न्याय सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। दुर्गा का पूजन करें।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न न्याय सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। गणेश का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले

का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न न्याय सम्बंधी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। शेषजी का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न न्याय संबंधी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। गृह देव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है प्रश्न न्याय संबंधी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। सूर्य का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ७२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न चोरी के सम्बंध में है। प्रश्न का फल अधम होने के कारण चीज नहीं मिलेगी। शिवजी का पूजन करें। कार्य सिद्ध होगा।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले

का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न चोरी सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कुछ वस्तु मिलेगी। अम्बिका का पूजन करें। कार्य सिद्ध होगा।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न चोरी सम्बधी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से वस्तु मिलेगी। धर्मराज का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न चोरी सम्बन्धी है। प्रन का फल उत्तम होने से वस्तु मिलेगी। विश्वदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न चोरी सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कुछ वस्तु मिलेगी। हरी भगवान का पूजन करें। कार्य सिद्ध होगा।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले

का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न चोरी सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से वस्तु नहीं मिलेगी। कामदेव का पूजन करें। कार्य सिद्ध होगा।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न चोरी सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से वस्तु नहीं मिलेगी। शम्भु का पूजन करें। कार्य सिद्ध होगा।

१ प्र० ८

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करनेवाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न मृत्यु सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य सिद्ध नहीं होगा। इन्द्र की पूजा करें। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करनेवाले का प्रश्न मृत्यु सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य सिद्ध नहीं होगा। राम का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करनेवाले

का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न मृत्यु सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सिद्ध होगा। कुबेर का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करनेवाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न मृत्यु सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सिद्ध होगा। वरुण का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न मृत्यु सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सिद्ध होगा। पृथ्वी की पूजा करें। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न मृत्यु सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। चन्द्र की पूजा करें। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न मृत्यु सम्बन्धी है। प्रश्न का

फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। सूर्य की पूजा करें। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ३७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न दण्ड संबंधी है। सो फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। चन्द्रदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न दण्ड सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। मङ्गलदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न दण्ड संबंधी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। बुधदेव का पूजन करें आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न दण्ड संबंधी है। प्रश्न का फल

उत्तम होने से कार्य होगा। गुरुदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न दण्ड सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। शुक्रदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न दण्ड सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। शनिदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वालों का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न दण्ड सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। रविदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ३२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न धन संबन्धी है। प्रश्न का फल

अधम होने से कार्य नहीं होगा। चन्द्रवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न धन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। मङ्गलवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न धन संबन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। बुधवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न धन संबन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा गुरुवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न धन संबन्धी है। प्रश्न का फल

उत्तम होने से कार्य होगा। शुक्रवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न धन सम्बन्धी है। प्रश्न का अधम होने से कार्य नहीं होगा। शनिवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न धन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल फल अधम होने से कार्य नहीं होगा रविवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ३१

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न रचना सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। गणेश का पूजन करें। कार्य सिद्ध होगा। आगे राम मालिक है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न रचना संबन्धी है। प्रश्न का

फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। गणेश का पूजन करें। कार्य सिद्ध होगा। आगे रामकृपा बलवती है।।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न रचना सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न रचना सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न रचना सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। आगे राम की कृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करनेवाले का प्रश्न उत्तम है प्रश्न रचना सम्बन्धी है। प्रश्न का फल

अधम होने से कार्य नहीं होगा। शंभु की पूजा करें। आगे राम की कृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न रचना सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। शंभु पूजा करें। आगे राम की कृपा बलवती है।

१ प्र० ५४-१८

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करनेवाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न शिकार सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। ब्रह्मा का पूजन करें। कार्य सिद्ध होगा। आगे राम की कृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न शिकार सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। ब्रह्मा का पूजन करें। कार्य सिद्ध होगा। आगे राम की कृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न शिकार सम्बन्धी है। प्रश्न का

फल उत्तम होने से कार्य होगा। आगे राम की कृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न शिकार सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। आगे रामकी कृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न शिकार सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। आगे राम की कृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न शिकार सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। आगे रामकी कृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न शिकार सम्बन्धी है। प्रश्न का

फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ७०

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न ऊपरी बाधा सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। विष्णु की पूजा करें। कार्य सिद्ध होगा। आगे रामकी कृपा है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करनेवाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न ऊपरी बाधा सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। विष्णु की पूजा करें। कार्य सिद्ध होगा। आगे रामकी कृपा है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न ऊपरी बाधा संबन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सिद्ध होगा। आगे राम-कृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न ऊपरी बाधा सम्बन्धी है।

प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सिद्ध होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न ऊपरी बाधा सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सिद्ध होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न ऊपरी बाधा सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य सिद्ध नहीं होगा। कार्य सिद्ध होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न ऊपरी बाधा सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य सिद्ध नहीं होगा। कार्य सिद्ध होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० १५

आचार्य महोदय का कथन है कि आपका प्रश्न उद्योग से लाभ होने के सम्बंध में है। प्रश्न का फल

कनिष्ट होने से उद्योग में लाभ नहीं होगा। आगे राम-कृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उद्योग में लाभ होने से सम्बन्धित है। प्रश्न का फल उत्तम होने से उद्योग में निश्चय करके लाभ होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उद्योग में लाभ होने से संबंधित है। प्रश्न का फल कनिष्ट होने से उद्योग में निश्चय करके लाभ नहीं होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न उद्योग में लाभ होने से सम्बन्धित है। प्रश्न का फल उत्तम होने से उद्योग में निश्चय करके लाभ होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ताका प्रश्न उद्योगमें लाभ होनेसे सम्बन्धित है। प्रश्न का फल उत्तम

होने से निश्चय करके लाभ होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उद्योगमें लाभ होने से सम्बन्धित है। प्रश्न का फल उत्तम होनेसे निश्चय करके लाभ होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न उद्योग में होने वाले लाभ से सम्बन्धित है। प्रश्न का फल निकृष्ट होने से उद्योग में निश्चय करके लाभ नहीं होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ८०

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न रोगी संबंधी है। प्रश्न का फल अधम होने से रोगी मर जायेगा। सोमवार का व्रत करें। जीवन बचेगा। आगे राम की इच्छा है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न रोगी सम्बंधी है। प्रश्न का

फल मध्यम होने से कार्य सिद्ध होने में द्विविधा है। मङ्गलवार का व्रत करें। आगे राम की इच्छा है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न रोगी संबंधी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सिद्ध होगा। बुधवारका पूजन करें। आगे राम की इच्छा है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वालों का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न रोगी संबंधी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सिद्ध होगा। गुरुवार का पूजन करें। आगे राम की इच्छा है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न रोगी सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सिद्ध होगा। शुक्रवार का व्रत करें। आगे रामकी इच्छा।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वालों का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न रोगी सम्बन्धो है। प्रश्न का

फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। शनिवार का व्रत करें। आगे राम की इच्छा।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है प्रश्न रोगी संबंधी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। रविवार का व्रत करें। आगे राम की इच्छा।

१ प्र० १४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न रोजगार सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। सोमदेव का पूजन करें। आगे रामकी कृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न रोजगार सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। मङ्गलदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य

होगा। प्रश्न रोजगार संबन्धी है। बुधदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न रोजगार सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। गुरुदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वालों का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न रोजगार संबन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। शुक्रदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वालों का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न रोजगार सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। शनिदेव का का पूजन करें। आगे रामकी कृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वालों का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न रोजगार सम्बन्धी है। प्रश्न

का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। रविदेव का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ४६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न राजद्वार सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। आप जल की पूजा करें। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न राजद्वार सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। पृथ्वी की पूजा करें। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न राजद्वार संबन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। आकाश की पूजा करें। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न राजद्वार सम्बन्धी है। प्रश्न का

फल उत्तम होने से कार्य होगा। पवन की पूजा करें। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न राजद्वार सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। पावक की पूजा करें। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न राजद्वार सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। सर्प की पूजा करें। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न राजद्वार सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। गृह देवता की पूजा करें। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ३८

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पत्र सम्बन्धी है। प्रश्न का फल

अधम होने से कार्य नहीं होगा। पृथ्वी की पूजा करें। आगे राम की इच्छा है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पत्र संबन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। गाय की पूजा करें। आगे राम की इच्छा है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पत्र सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य होगा। गङ्गा की पूजा करें। आगे राम की इच्छा है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पत्र सम्बन्धी है। पूरन का फल उतम होने से कर्य होगा। गङ्गाधर की पूजा करें। आगे राम की इच्छा है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पत्र सम्बन्धी है। प्रश्न का

फल उत्तम होने से कार्य होगा। यमुना प्रिय की पूजा करें। आगे राम की इच्छा है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पत्र सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम न होने से कार्य नहीं होगा। विष्णु की की पूजा करें। आगे राम की इच्छा है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पत्र सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य होगा। शिव की पूजा करें। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ५४-५५-६७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पुत्र संबन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। रविवार का व्रत करें। कार्य सफल होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पुत्र सम्बन्धी है। प्रश्न का फल

अधम होने से कार्य में द्विविधा है। सोमवारका व्रतकरें। कार्य सफल होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पुत्र सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पुत्र सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पुत्र सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करनेवाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पुत्र सम्बन्धी है। प्रश्न का

फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। शनिवार का व्रत करें। कार्य सफल होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पुत्र सम्बधी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। रविवार का व्रत करें। कार्य सफल होगा। आगे रामकृपा बलवती है

१ प्र० ७५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करनेवाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न धन सम्बन्धी है। प्रश्नका फल अधम होने से कार्य सफल नहीं होगा। सोमवार का व्रत करें। कार्य सफल होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न धन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य सफल नहीं होगा। मङ्गलवार का व्रत करें। कार्य सफल होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले

का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न धन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। आगे भगवान राम की कृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न धन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करनेवाले का प्रश्न उत्ताम है प्रश्न धन सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करनेवाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न धन सम्बंधी है। प्रश्न का फल उत्तम न होने से कार्य सफल नहीं होगा। आगे राम-कृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले

का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न धन संबन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। रविवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ६४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का का प्रश्न गर्भवती के पुत्र जनने से सम्बन्धित है। प्रश्न का फल कनिष्ट होने से गर्भवती के पुत्र न होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न गर्भ के बालक के सम्बन्ध में है। आगे प्रश्न प्रश्न का फल उत्तम होने से गर्भवती निश्चय करके पुत्र जनेगी। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न गर्भ के बालक के सम्बन्ध में है। अब प्रश्न का फल कनिष्ट होने से गर्भवती निश्चय करके पुत्र नहीं जनेगी। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का

प्रश्न गर्भ के बालक के सम्बन्ध में हैं। आगे प्रश्न का फल उत्तम होने से गर्भवती निश्चय करके पुत्र जनेगी। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न गर्भ के बालक के सम्बन्ध में है। अब आगे प्रश्न का फल उत्तम होनेसे गर्भवती निश्चय करके पुत्र जनेगी आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न गर्भ के बालक के संबन्ध में है। अब आगे प्रश्न का फल उत्तम होने से गर्भवती के निश्चय करके पुत्र होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न गर्भ के बालक के सम्बन्ध में है। आगे प्रश्न का फल कनिष्ट होने से गर्भवती निश्चय करके पुत्र नहीं जनेगी। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० २२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का

प्रश्न धर्म संबन्धी कार्य के सफल होने से सम्बन्धित है। आगे प्रश्न का फल कनिष्ट होने से धर्म सम्बन्धी कार्य नहीं होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न धर्म सम्बन्धी कार्य के सफल होने से सम्बन्धित है। आगे प्रश्न का फल उत्तम होने से धर्म संबन्धी कार्य निश्चय करके होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न धर्म संबन्धी कार्य के सफल होने से संबन्धित है। आगे प्रश्न का फल कनिष्ट होने से धर्म संबन्धी कार्य निश्चय करके नहीं होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न धर्म संबन्धी कार्य के सफल होने के संबन्धित है। आगे प्रश्न का फल उत्तम होने से धर्म संबन्धी कार्य निश्चय करके होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का

प्रश्न धर्म संबन्धी कार्य सफल होने से संबन्धित है। आगे प्रश्न का फल उत्तम होने से धर्म संबन्धी कार्य निश्चय करके होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न धर्म संबन्धी कार्य सफल होंने से सम्बन्धित है। आगे प्रश्न का फल उत्तम होंने से धर्म संबन्धी कार्य निश्चय करके होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न धन सम्बंधी कार्य के सफल होंने से संबन्धित है। प्रश्न का फल कनिष्ट होने से धर्म संबन्धी कर्य निश्चय करके नहीं होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ६-७२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न चोरी गई चीज के मिलने के संबन्ध में है। आगे प्रश्न का फल कनिष्ट होंने से चोरी गई चीज निश्चय करके नहीं मिलेगी। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का

प्रश्न चोरी गई चीज के मिलने के संबन्ध में है। आगे प्रश्नका फल उत्तम होनेसे चोरी गई चीज निश्चय करके मिलेगी। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्त्ता का प्रश्न चोरीगई चीजके मिलनेके सम्बन्धमें है। आगे प्रश्न का फल कनिष्ट होने से चोरी गई चीज निश्चय करके नहीं मिलेगी। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का चोरी गई चीज के मिलने के सम्बन्धमें है। आगे प्रश्न का फल उत्तम होने से चोरी गई चीज निश्चय करके मिलेगी। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न चोरी गई चीज मिलने के सम्बन्ध में है। आगे प्रश्न का फल उत्तम होने से चोरी गई चीज निश्चय करके मिलेगी। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का

प्रश्न चोरी गई चीज मिलने के सम्बन्ध में है। आगे प्रश्न का फल उत्तम होने से चोरी गई चीज निश्चय करके मिलेगी आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न चोरी गई चीज मिलने के सम्बन्ध में है। आगे प्रश्न का फल कनिष्ट होने से चोरी गई चीज नहीं मिलेगी। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० १६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न गुम मनुष्य मिलनेके सम्बन्ध में है। आगे प्रश्न का फल कनिष्ट होने से गुम मनुष्य निश्चय करके नहीं मिलेगा। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न गुम मनुष्य के मिलने के सम्बन्ध में है। आगे प्रश्न का फल उत्तम होने से गुम मनुष्य निश्चय करके मिलेगा। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का

प्रश्न गुप्त मनुष्य के मिलने के सम्बन्ध में है। आगे प्रश्न का फल कनिष्ट होने से गुप्त मनुष्य निश्चय करके नहीं मिलेगा। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न गुप्त मनुष्य मिलने के सम्बन्ध में है। आगे प्रश्न का फल उत्तम होने से गुप्त मनुष्य निश्चय करके मिलेगा। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न गुप्त मनुष्य के सम्बन्धमें है। आगे प्रश्न का फल उत्तम होने से गुप्त मनुष्य निश्चय करके मिलेगा। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न गुप्त मनुष्य के मिलने के सम्बन्ध में है। आगे प्रश्न का फल उत्तम होने से गुप्त मनुष्य निश्चय करके मिलेगा। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का

प्रश्न गुप्त मनुष्य मिलने के सम्बन्ध में हैं। आगे प्रश्न का फल कनिष्ट होने से गुप्त मनुष्य निश्चय करके नहीं मिलेगा। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ८१

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न दामाद गुणवान मिलने के संबन्ध में है। आगे प्रश्न का फल कनिष्ट होने से दामाद निश्चय करके गुणवान नहीं मिलेगा। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न दामाद गुणवान मिलने संबन्ध में है। आगे प्रश्न का फल उत्तम होने से दामाद निश्चय करके गुणवान मिलेगा। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न दामाद गुणवान मिलने के सम्बन्ध में है। आगे प्रश्न का फल कनिष्ट होने से दामाद गुणवान नहीं मिलेगा। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का

प्रश्न दामाद गुणवान मिलने के संबंध में है। आगे का प्रश्न उत्तम होने से दामाद निश्चय करके गुणवान मिलेगा। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न दामाद गुणवान मिलने के सम्बन्ध में है। आगे प्रश्न का फल उत्तम होने से दामाद निश्चय करके गुणवान मिलेगा। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न दमाद गुणवान मिलने के सम्बन्ध में है। आगे प्रश्न का फल उत्तम होने से दामाद गुणवान मिलेगा। आगें रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न दामाद गुणवान मिलने के सम्बन्ध में है। आगे प्रश्न का फल कनिष्ट होने से दामाद निश्चय करके गुणवान नहीं मिलेगा। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का

प्रश्न रुठे मनुष्य के प्रसन्न होने के सम्बन्ध में है। आगे प्रश्न का फल कनिष्ट होने से रुठा मनुष्य निश्चय करके प्रसन्न नहीं होगा। आगे रामकृपा बलती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न रुठे मनुष्य के प्रसन्न होने के सम्बन्ध में है। आगे प्रश्न का फल उत्तम होने से रुठा मनुष्य निश्चय करके प्रसन्न होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न रुठे मनुष्य के प्रसन्न होने के सम्बन्ध में है। आगे प्रश्न का फल कनिष्ट होने से रुठा मनुष्य निश्चय करके प्रसन्न नहीं होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न रूठ मनुष्य के प्रसन्न होने के सम्बन्ध में है। आगे प्रश्न का फल उत्तम होने से रूठा मनुष्य निश्चय करके प्रसन्न होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का

प्रश्न रूठे मनुष्य के प्रसन्न होने के सम्बन्ध में है। आगे प्रश्न का फल उत्तम होने से रूठा मनुष्य निश्चय करके प्रसन्न होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न रूठे मनुष्य के प्रसन्न होने के सम्बन्ध में है। आगे प्रश्न का फल उत्तम होने से रूठा मनुष्य निश्चय करके प्रसन्न होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न रूठे मनुष्य के प्रसन्न होने के सम्बन्ध में है। आगे प्रश्न का फल कनिष्ट होने से रूठा मनुष्य निश्चय करके प्रसन्न नहीं होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

१ प्र० ४७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न परीक्षा सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होनेसे कार्य सफल नहीं होगा। महादेवजी का पूजन करें। आगे राम की इच्छा है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले

का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न परीक्षा सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य सफल होने में द्विविधा है। हनुमानजी का पूजन करें। आगे राम की इच्छा है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न परीक्षा सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। बुधदेव का पूजन करें। आगे राम की इच्छा है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न परीक्षा सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। गुरुदेव का पूजन करें। आगे राम की इच्छा है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न परीक्षा संबन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य में द्विविधा है। राम का पूजन करें। कार्य सिद्ध होगा।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले

का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न परीक्षा सम्बंधी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य में सफलता नहीं मिलेगी। शनिवार को हनुमान का पूजन करें। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न परीक्षा सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य नहीं होगा। सूर्यवार को दुर्गा की पूजाकरें। कार्य सिद्ध होगा।

१ प्र० ५६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वालों का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न साझा सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य सफल नहीं होगा। सोमवार का व्रत करें। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करनेवाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न साझा संबन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कुछ कार्य सफल होगा। मङ्गलवार का व्रत करें। आगे राम की कृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले

का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न साझा सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। आगे राम की कृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करनेवाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न साझा सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। गुरुवार का व्रत करें। आगे राम की कृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करनेवाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न साझा सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम न होने से कार्य सफल होने में द्विविधा है। शुक्रवार का व्रत करें। आगे राम की कृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न साझा संबन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। शनिवार का व्रत करें। आगे राम की कृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले

का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न साक्षा सम्बन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य सफल नहीं होगा। रविवार का व्रत करे। आगे राम की इच्छा है।

१ प्र० ४८-६५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न भाग्य सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम न होने से कार्य सफल नहीं होगा। सोमवार का व्रत करें। आगे राम की कृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न भाग्य सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम न होने से कार्य सफल होने में द्विविधा है। मंगलवार का व्रत करें। आगे राम की कृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न भाग्य सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। आगे राम की कृपा अपरंपार है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले

का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न भाग्य संबन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। आगे राम की कृपा अपरंपार है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न भाग्य संबन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम न होने से कार्य कुछ सफल होगा। महादेव की पूजा करें। आगे राम की मरजी है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न भाग्य सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम न होने से कार्य कुछ भी सफल नहीं होगा। शनिवार का व्रत हनुमान की पूजा करें। कार्य हो सकेगा। आगे राम की मरजी।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न भाग्य संबन्धी है। प्रश्न का फल अधम होने से कार्य न होगा। रविवार का व्रत एवं देवी की पूजा करें। कार्य होगा। आगे रामकी मरजी।

१ प्र० २४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले

का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न मृतक जीव सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से चौथे लोककी प्राप्ति है। महादेव जीके पूजनसे मुक्ति मिलेगी। आगे रामकृपा बलवती है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न मृतक जीव सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से तीसरे लोक की प्राप्ति है। ब्राह्मण भोजन कराने से मुक्ति मिलेगी। आगे राम की कृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करनेवालों का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न मृतक जीव सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से मुक्ति मिलेगी। आगे राम की कृपा का पारावार नहीं है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न मृतक जीव सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से मुक्ति मिलेगी। आगे राम की कृपा का पारावार नहीं है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले

का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न मृतक जीव संबन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम न होने से दूसरे के यहां जन्म मिला है। उसके बारे में चिन्ता व्यर्थ है। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है प्रश्न मृतक जीव संबन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम न होने से पांचवे लोक की प्राप्ति है। पवन पुत्र का पूजन करें। मुक्ति मिलेगी। आगे रामेच्छा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न मृतक जीव संबन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम न होने से गति नहीं होगी। सूर्यदेव का पूजन करें तो होगी।

१ प्र० ५७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न स्वप्न सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम न होने से कार्य सफल नहीं होगा। अर्थात् स्वप्न का फल कुछ बुरा करेगा। सोमवार का व्रत करें। आगे राम की इच्छा है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करनेवाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न स्वप्न संबन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम न होने से कुछ कार्य सफल होगा। अर्थात् स्वप्न विशेष परिवर्तन नहीं करेगा। आगे रामकृपा बलवती है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करनेवाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। स्वप्न सम्बन्धी प्रश्न है। कोई शुभकार्य होगा। आगे रामकृपा बलवती है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करनेवालों का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न स्वप्न सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। स्वप्न से कोई फायदा है। आगे रामकृपा बलवती है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करनेवालों का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न स्वप्न सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम न होने से कार्य सफल नहीं होगा। अर्थात्

स्वप्न का फल बुरा होगा। ब्राह्मण भोजन करायें। आगे रामकृपा बलवती है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करनेवाले का प्रश्न उतम है। प्रश्न स्वप्न संबन्धी है। प्रश्नका फल अधम होनेसे कार्य सफल नहीं होगा। अर्थात् स्वप्न का फल बुरा होगा। ब्राह्मण भोजन करायें। आगे रामकृपा बलवती है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न स्वप्न सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से स्वप्न का फल बुरा होगा। अर्थात् कोई बुरी बात होगी। सूर्यदेव का पूजन करें। आगे राम की इच्छा बलवान है।

१ प्र० ८७ से ६८, ८१ से ८६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पारिवारिक सुख सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम न होनेसे कार्य सफल नहीं होगा। अर्थात् मनोकामना पूर्ण न होगी। सोमवार का व्रत करें। आगे राम की मरजी है।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करनेवाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पारिवारिक सुख सम्बन्धी है। प्रश्नका फल उत्तम न होने से कार्य कुछ सफल होगा। अर्थात् मनोकामना कुछ पूर्ण होगी। मङ्गलवार का व्रत करें। आगे राम की मरजी है।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पारिवारिक सुख सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सफल होगा। अर्थात् मनोकामना पूर्ण होगी। हनुमान की पूजा करें। आगे राम की मरजी है।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न पारिवारिक सुख सम्बन्धो है। प्रश्न का फल उत्तम होनेसे कार्य सफल होगा। अर्थात् मनोकामना पूर्ण होगी। गुरुवार का व्रत करें। आगे राम की मरजी है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करनेवाले

का प्रश्न उतम है। प्रश्न पारिवारिक सुख सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उतम न होने से कार्य सफल नहीं होगा। अर्थात् मनोकामना पूर्ण न होगी। आगे राम की मरजी है।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उतम है। प्रश्न पारिवारिक सुख सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य नहीं होगा। अर्थात् मनोकामना पूर्ण न होगी। आगे राम की मरजी है।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करनेवाले का प्रश्न उतम है। प्रश्न पारिवारिक सुख सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य नहीं होगा। अर्थात् मनोकामना पूर्ण न होगी। आगे राम की मरजी है।

१ प्र० ११

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उतम है। प्रश्न नोकरी सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उतम न होने से कार्य नहीं होगा। चंद्रवार का व्रत करें। कार्य सफल होगा।

२

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले

का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न नोकरी सम्बन्धी है। प्रश्न का फल मध्यम होने से कार्य होने में द्विविधा है। मङ्गल वार का व्रत करें। कार्य सफल होगा।

३

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न नोकरी सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सिद्ध होगा।

४

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न नोकरी सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कार्य सिद्ध होगा। आगे राम की मरजी है।

५

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न नोकरी सम्बन्धी है। प्रश्न का फल उत्तम होने से कुछ कार्य होगा। विष्णु का पूजन करें। कार्य सिद्ध होगा।

६

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न नोकरी सम्बन्धी है। प्रश्न का

फल बुरा होने से कार्य नहीं होगा। शनिवार का व्रत करें। कार्य सिद्ध होगा।

७

आचार्य महोदय का कथन है कि प्रश्न करने वाले का प्रश्न उत्तम है। प्रश्न नौकरी सम्बन्धी है। प्रश्न का फल बुरा होने से कार्य नहीं होगा। रविवार का व्रत करें। कार्य सिद्ध होगा।

॥ इति श्री भृगु प्रश्नावली समाप्तम् ॥

❋ प्रश्न पूछने की विधि ❋

सर्व प्रथम अपने मन में किसी अभीष्ट प्रश्न को सोचो उसके उपरान्त उस प्रश्न को कोष्ठक में देखो उस प्रश्न के सामने जो स्वर या व्यन्जक लिखे हुए हैं उन्हें ध्यान में रखले। उस स्वर या व्यन्जक के वर्ग के अनुसार कोष्ठक में किसी भी दो अँको पर हाथ आंख बन्द करके रखे। इसके बाद प्रश्न के सामने का अङ्क एवं उक्त दो अङ्कों को ज्योतिषी एवं पण्डित को जिससे प्रश्न पूछे। उसे बतादे। उदाहरणार्थ "नौकरी लगेगी" प्रश्न किया। उसके सामने उ लिखा है। अर्थात् अवर्ग के कोष्ठक में दो अँक छोटे—

अतः उन्हें पण्डित को बता दिया।

इसके ऊपरान्त वह स्वयं गणित करके आपको उसका फल बतावेगा जो इसी पुस्तक में "गणितविधि" नामक शीर्षक में बतलावेगा।

❀ गणित-विधि ❀

प्रश्न कर्ता द्वारा बतलाये हुए दो अंकों को जोड़ कर ९ का भाग दे लब्धि को तीसरे अँक में जो प्रश्न के सामने रखा था उसमें जोड़ कर जो योगफल आवे। उसमें ७ का भाग दे। जो शेष बचे उसी इकाई को प्रश्न फल में देख कर वर्ग के अनुसार फल बतावे। यह फल जहां तक ज्योतिष एवं गणित से सम्बन्ध रखता है वह सोलह आना ठीक होगा। आगे ईश्वर की मरजी कोई भी नहीं जान सकता है।

कवर्ग-यन्त्र १ कष्ठ		
३१	३०	३५
३६	३२	२८
२९	३४	३३

स वर्ग-यन्त्र २ कोष्ठ		
४९	४८	५३
५४	५०	४६
४७	५२	५१

प वर्ग यन्त्र ३ कोष्ठ		
६७	६६	७१
७२	६८	६४
६५	७०	६९

(क्षत्रज्ञ)अन्तिमवर्ग यन्त्र ४ कोष्ठ		
८५	८४	८९
९०	८६	८२
८३	८८	८७

तवर्ग यन्त्र ५ कोष्ठ		
१३	१२	१७
१८	१४	१०
११	१६	१५

चवर्ग यन्त्र कोष्ठ ६		
२२	२१	२६
२७	२३	१९
२०	२५	२४

उष्मा-यन्त्र ७ कोष्ठ		
९४	९३	९८
९९	९५	९१
९२	९७	९६

अन्तस्थ यन्त्र ८ कोष्ठ		
४०	३९	४४
४५	४१	३७
३८	४३	४२

तवर्ग यन्त्र ६ कोष्ठ			अवर्ग यन्त्र १० कोष्ठ		
७६	७५	८०	५८	५७	६२
८१	७७	७३	६३	५६	५५
७४	७६	७८	५६	६१	६०

उपकोष्ठ १

क्रम संख्या	प्रश्न नाम	प्रश्नांक	प्रश्नाक्षर
१	गांव मिलेगा	१०	अ
२	रोग मिटेगा	१२	क
३	स्त्री सुख होगा	१४	ख
४	जुवा में जीतेंगे	१६	ग
५	भाई से सुख होगा	१८	घ
६	शुभ वस्तु मिलेगी	२०	ङ
७	रूठा आदमी प्रसन्न होगा	११	च
८	इस वर्ष मृत्यु तो नहीं होगी	१३	छ
९	सुख मिलेगा	१५	ज
१०	विद्या आवेगी	१७	झ
११	नौकरी लगेगी	१९	ड
१२	तबदीली होगी	२१	प
१३	आत्म ज्ञान होगा	२३	फ
१४	रोजगार चलेगा	२५	ब
१५	उद्योग से लाभ होगा	२७	स

क्रम संख्या	प्रश्न का नाम	प्रश्नांक	प्रश्नाक्षर
१६	गुम मनुष्य मिलेगा	२६	म
१७	जीत होगी	३१	ऋ
१८	शिकार होगी	३३	ट
१६	कुशल होगी	३५	ठ
२०	गढ़ा धन मिलेगा	३७	ड
२१	बुद्धि अच्छी होगी	३६	ढ
२२	धर्म सम्बन्धी कार्य होगा	४०	लृ
२३	ब्याज खाने में लाभ होगा	२२	त
२४	मृतक जीव को मुक्ति मिलेगी	२४	थ
२५	गर्भ है ।	२६	द
२६	कार्य होगा	२८	ध
२७	गर्भ रहेगा	३०	ङ
२८	मित्रता होगी	३२	ञ
२६	भाव मन्दा होगा	३४	ण
३०	खेती अच्छी होगी	३६	न
३१	नवीन रचना होगी	३८	ऋ
३२	जमीन में धन गढ़ा है ।	४१	अं

उपकोष्ठ २

क्रम संख्या	प्रश्न का नाम	प्रश्नांक	प्रश्नाक्षर
३३	कैदी छूटेगा	६६	क
३४	गुण मिलेगा	६७	र
३५	पुत्र सुख देगा	६५	ल
३६	मुकदमा जीतेंगे	६३	व
३७	राज दन्ड तो नहीं होगा	६१	श
३८	पत्र का उत्तर मिलेगा	८६	ष
३६	चालचलन अच्छा होगा	८७	स
४०	देश स्वाधीन होगा	८५	ह
४१	रण होगा	८३	क्ष

क्रम संख्या	प्रश्न का नाम	प्रश्नांक	प्रश्नाक्षर
४२	ऋण पटेगा	८१	क्ष
४३	मकान मिलेगा	७६	थ
४४	मृत्यु तीर्थ में होगी	७७	ज
४५	शेर की शिकार होगी	७५	ठ
४६	राजद्वार से लाभ होगा	७३	रा
४७	परीक्षा में उत्तीर्ण होंगे	७१	क
४८	आज का दिन अच्छा निकलेगा	७०	च
४९	बिक्री होगी	६८	प
५०	तीर्थ बदा है	६६	ट
५१	ठेका मिलेगा	६४	म
५२	वह चाहता है	६२	ज
५३	उच्च पदवी मिलेगी	६०	ड.
५४	इसी स्त्री से पुत्र होगा	६१	ण
५५	पुत्र गोद लेंगे तो मिलेगा	५६	न
५६	साझा करने से नफा होगा	५७	ड
५७	मेरे स्वप्न का फल अच्छा होगा	५५	ज
५८	वर्षा होगी	५३	छ
५९	तरक्की होगी	५१	ग
६०	छुट्टी मिलेगी	४६	द
६१	वह जीवित है	४७	ध
६२	शत्रु नष्ट होगा	४५	घ
६३	धरोहर मिलेगी	४३	भ
६४	गर्भवती पुत्र जनेगी	४२	ढ
६५	यह मास सुख से निकलेगा	४४	न

उपकोष्ठ ३

६६	यात्रा होगी	१००	क
६७	पुत्रोत्पन्न होगा	९८	ख
६८	जमीन मिलेगी	९६	ग
६९	योग सिद्ध होगा	९४	घ
७०	ऊपरी बाधा मिटेगी	९१	च

क्रम संख्या	प्रश्न नाम	प्रश्नांक	प्रश्नाक्षर
७१	कार्य कबतक होगा	९०	छ
७२	चोरी गई चीज मिलेगी	८८	ज
७३	गोद लिया पुत्र सुख देगा	८६	झ
७४	प्रसंशा होगी	८४	अ
७५	धन मिलेगा	८२	इ
७६	विवाह होगा	८०	उ
७७	राज्य मिलेगा	७८	ऋ
७८	खोया पशु मिलेगा	७६	लृ
७९	सच्चा इन्साफ (न्याय होगा)	७४	ए
८०	रोगी मरेगा तो नहीं	७२	ओ
८१	दामाद गुणवान मिलेगा	७०	अं
८२	पिता की मृत्यु तो नहीं होगी	६९	अः
८३	बहन सुख से रहेगी	६७	ट
८४	भाई में बटवारा होगा	६५	ठ
८५	मां से मेल रहेगा	६३	ड
८६	पड़ोसी से मेल रहेगा	६१	ढ
८७	नानी तो मरेगी	५८	प
८८	मामा तो जीवित रहेगा	५६	फ
८९	भाई का जन्म होगा	५४	ब
९०	सगाई होगी	५२	भ
९१	धन आवेगा	५०	त
९२	खर्च होगा	४८	थ
९३	भक्ति उत्पन्न होगी	४६	द
९४	दुकान में लाभ होगा	४४	ध
९५	नौकरी में लाभ होगा	१	न
९६	भाई से मेल रहेगा	२	य
९७	भाई सुख से रहेगा	३	र
९८	पिता सुख से रहेगा	४	ल

मुद्रक—पं० जयसिंह शर्मा, जयप्रेस, बंगाली घाट, मथुरा।